CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th Feb. 2021, Revised on 19th Feb. 2021, Accepted 19th Feb. 2021

आलेख

शिक्षक की स्वतंत्र सोच पर पहरा

* कुलदीप
व्याख्याता
रा. उ. मा. वि. समीजा, उदयपुर
Email: brothersemitra00077@gmail.com, Mo. 99297 92629

बीज शब्द – *अनुशासित, लोकतंत्रात्मक विचार धारा, स्वतंत्र चिंतन आदि।*

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। अनुशासित व लोकतंत्रात्मक विचार धारा वाले राष्ट्र के सृजन में शिक्षक का अहम योगदान रहा है। लेकिन शिक्षक ऐसा तभी कर सकता है जब वह स्वयं स्वतंत्रता पूर्वक चिंतन कर सके। लेकिन वर्तमान समय में क्या ऐसा वातावरण है जिसमें रहकर एक शिक्षक अपनी स्वतंत्र सोच एवं विचारों को समाज में प्रकट कर सके। इस बात को समझने से पहले हमें शिक्षक की कक्षा व समाज में भूमिका को अलग अलग समझना होगा।

शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण भूमिका कक्षा कक्ष में होती है जहां शिक्षक अपने ज्ञान व चिंतन का प्रयोग कर बच्चों में स्वतंत्र चिंतन व सृजनात्मकता का विकास करता है, वह बच्चे में कुछ नया सीखनें का कौतुहल पैदा करता है। यहां पर इस बात का भी समर्थन किया जा सकता है कि शिक्षक को कक्षा कक्ष में अपनी व्यक्तिगत विचारधारा को प्रकट करनें से बचना चाहिए या यूं कहे कि,पाठयपुस्तक में दी गई पाठयसामग्री को अपनें विचारों में ढाल कर पेश नहीं करना चाहिए।कक्षा कक्ष में शिक्षक को पाठयपुस्तक के अध्याय में निहित उदेश्यो को ही पूरा करनें प्रयास करना चाहिए।

यहां अहम बात यह है कि कक्षा कक्ष से बाहर भी शिक्षक की समाज में प्रमुख भूमिका होती है चूंकि शिक्षक शिक्षा व अध्ययन से प्रत्यक्ष रूप से जुडा होता है अतः समाज से जुडे हर विषय पर उसका अपना एक नजरिया होता है बहुत बार ऐसा होता है कि शिक्षक का नजरिया समाज या सरकार नीतियों से मेल नहीं खाता है या कहें अपनें अलग नजरिये के कारण शिक्षक समाज या सरकार की विचारधारा के विरोधी के रूप में खडा होता है,लेकिन यहां समझनें वाली बात यह है कि क्या शिक्षक का यह व्यवहार अनुचित है ? क्या शिक्षक ऐसे स्वतंत्र विचार जो समाज व सरकार की वर्तमान दिशा के अनुरूप न हों वह समाज के लिए घतक सिद्व हो सकती है? मेरा मानना है नहीं।

पिछले कुछ सालों से ऐसे अनेक उदाहरण देखनें को मिलें हैं जहां सरकार द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक की स्वतंत्र सोच को बांधनें प्रयास किया है अभी हाल ही में हरियाणा सरकार नें दो शिक्षकों इसलिए निलम्बित कर दिया क्योंकि उन शिक्षकों ने किसान आन्दोलन का समर्थन किया तथा उस आन्दोलन में भाग लिया, यह निलंबन मात्र दो शिक्षकों का ही नहीं था बल्कि हजारों शिक्षकों की स्वतंत्र सोच पर सरकारी ताला था। शिक्षक को भी सामन्य नागरिक की तरह संविधान ने मौलिक अधिकार प्रदान किए

हैं जिसका प्रयोग कर एक शिक्षक भी समाज के किसी मुदे पर अपनी स्वतंत्र सोच के साथ अपनें निष्कर्ष एवं विचार समाज और सरकार के सामनें प्रकट कर सकता है।

सरकार को भी किसी दूसरे कर्मचारी की तुलना में शिक्षक के स्वतंत्र विचारों से अधिक भय लगता है क्योंकि शिक्षक के विचार समाज में तेज गति से फैलते हैं तथा समाज को अधिक प्रभावित करतें हैं इसलिए विभिन्न सरकारों ने विभागीय नियमों के माध्यम से शिक्षकों की स्वतंत्र सोच को बांधनें का प्रयास किया है।

शिक्षकों की सोच पर पहरा उच्च शिक्षा के शिक्षकों की तुलना में स्कूली शिक्षा के शिक्षकों पर अधिक देखनें को मिलता है। स्कूली शिक्षा के शिक्षक अपने स्वतंत्र विचारों को प्रकट करनें में सुरक्षित महसूस नहीं करते है।

इस बात पर कोई दो राय नहीं है की शिक्षक पर समाज के सामनें एक आदर्श प्रस्तुत करने की बहुत बडी जिम्मेदारी होती है लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं हो सकता की किसी भी राजनीतिक या सामाजिक मुदे पर वह अपने स्वतंत्र विचार प्रकट नहीं कर सकता है। शिक्षक के स्वतंत्र विचारधारा व चिंतन से ही समाज में सकारात्कम परिवर्तन संभव है। एक शिक्षक के स्वतंत्र विचारों को बांधनें का प्रयास समाज और सामाजिक व्यवस्था के लिए दुर्भाग्यपूर्ण ही है।

किसी भी समाज को नई दिशा देने में तथा उसे प्रगतीशील बनाने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इतिहास में प्लेटो,अरस्तु,कौटिल्य जैसे अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं जिनके विचारों से समाज व सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी एवं सकारत्मक परिवर्तन आए हैं इसलिए हमारे समाज और सत्ता के लोगों को चाहिए कि शिक्षकों के विचारों का सम्मान करते हुए एसे वातावरण का निर्माण करे जिसमें शिक्षक अपने विचारों को खुलेमन व स्वतंत्रता पूर्वक प्रकट कर सकें तथा समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सके। जो कि एक शिक्षक का प्रमुख दायित्व है।

*** Corresponding Author**
कुलदीप, व्याख्याता
रा. उ. मा. वि. समीजा, उदयपुर
Email: brothersemitra00077@gmail.com, Mo. 99297 92629